शब्द-शक्ति ककरा कहल जाइत अछि तथा ई कतेक प्रकारक होइत अछि ?

साहित्यमे शब्दक अत्यधिक महत्व अछि। साहित्यक निर्माण शब्दक माध्यम सँ करल जाइत अछि। प्राचीन भारतीय आचार्य लोकनिक कथन छन्हि जे साहित्यक निर्माण बिना शब्दक नहि भऽ सकैत अछि। शब्द काव्यक शरीर थिक। वस्तुतः काव्यक अस्तित्व शब्दहिँ पर आधारित अछि। शब्दक भीतर निहित भाव कए स्पष्ट करबाक व्यापारकेँ शब्द-शक्ति कहल जाइत अछि। शब्दक परिभाषा दैत प्राचीन आचार्य लोकनि कहलन्हि अछि— "ध्वनिक सार्थक समूहकेँ शब्द कहल जाइत अछि" शब्दक महिमा कामधेनु एवं कल्पवृक्ष जकाँ होइत अछि। जाहि रूपेँ बाणमे शक्ति रहैत अछि' ओहि शक्तिशाली बाण सँ मनुष्य तत्क्षण घायल भऽ जाइत अछि, तहिना शब्दहुमे शक्ति रहैत अछि, जे प्रयोगमे अएला पर अपन प्रभाव दैखि जाइत अछि।

मुख्य रूपसँ वाचक, लक्षक एवं व्यञ्जक, एहि तीनि प्रकारक शब्दक अर्थ-बोध कएँ शब्द-शक्ति कहल जाइत अछि। मुख्यतः शब्द-शक्ति तीनि प्रकारक होइत अछि — अभिधा-शक्ति, लक्षणा-शक्ति एवं व्यञ्जना-शक्ति।

1. अभिधा शक्ति → जाहि शक्ति सँ प्रचलित शब्दक सामान्य ज्ञान हो, तकरा "अभिधा शक्ति" कहल जाइत अछि। आचार्य मम्मट एहि पर विचार करैत कहैत छथि जे साक्षात सांकेतिक अर्थ मुख्य अर्थ होइत अछि आ ताहि अर्थकेँ बोध करएनिहार शब्दक व्यापारकेँ अभिधा शक्ति कहल जाइत अछि। प्रश्न उठैत अछि जे ई साक्षात सांकेतिक शब्द की थिक ? कोनहुँ वस्तु कएँ प्रत्यक्ष देखार ई कहि देल जाय जे ई वस्तुक अमुक नाम अछि, त' एहि प्रकारक निर्देशकेँ 'साक्षात संकेत' कहल जाइत अछि। अभिधा शक्तिक माध्यमसँ अर्थक साक्षात संकेत भेटैत अछि। एहि शक्तिक द्वारा प्राप्त अर्थ तीनि प्रकारक होइत अछि— रूढ़ शब्द, यौगिक शब्द एवं योगरूढ़ि शब्द।

रूढ़ि शब्द → रूढ़ि शब्दक व्युत्पत्ति सम्भव नहि होइत अछि। उदाहरणार्थ - राजा। जँ एकरा दू भागमे विभाजित कए देल जाय त' रा + जा भऽ जाइत अछि, जकर किछु अर्थ नहि होइत

यौगिक शब्द → जे शब्द व्युत्पत्ति सुलभ एवं प्रकृतिक माध्यम सँ अर्थक बोध कराबए, ओकरा यौगिक शब्द कहल जाइछ। जेना- दिवा + कर = दिवाकर। दिवाक अर्थ भेल दिन आओर करक अर्थ भेल करनिहार। सूर्य मे दिन करबाक शक्ति छन्हि, तेँ हुनका दिवाकर कहल जाइछ।

योगरूढ़ि → जे शब्द यौगिक शब्दक सदृश व्युत्पत्ति सुलभ होइछ तथा रूढ़ि शब्दक सदृश एकहिटा अर्थ देखबैछ, योगरूढ़ि कहल जाइछ। जेना- वारि + ज = वारिज। 'वारि' सँ अर्थ भेल पानी तथा 'ज' सँ जन्म लेनिहार।

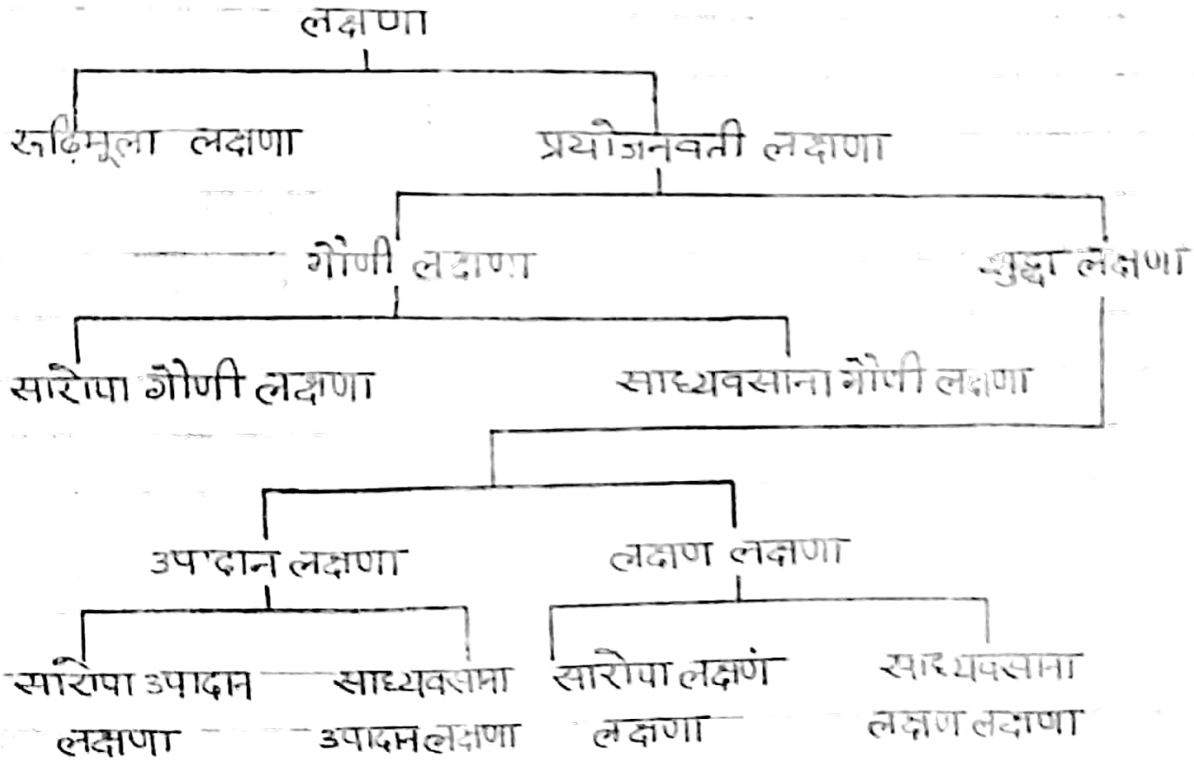

[2] लक्षणा-शक्ति → मुख्य अर्थक बोध भेला पर रूढ़ि अथवा प्रयोजनक कारणेँ जाहि द्वारा मुख्यार्थ सँ सम्बन्ध रखनिहार अन्य अर्थ लक्षित होइत अछि तकरा लक्षणा-शक्ति कहल जाइत अछि। एकर अग्रांकित भेद अछि—

[3] व्यञ्जना-शक्ति → अभिधा-शक्ति एवं लक्षणा-शक्तिक पश्चात् जे शक्ति अबैत अछि तकरा व्यञ्जना-शक्ति कहल जाइत अछि। एहि सँ व्यंग्यार्थक बोध होइत अछि। व्यञ्जना शब्द-शक्ति जाहि व्यंग्यार्थ केँ देखबैत अछि तकरा ध्वन्यार्थ, सूच्यार्थ, आक्षेपार्थ, प्रतीयमानार्थ आदि सेहो कहल जाइत अछि। कारण, व्यञ्जना-शक्ति नहि त' अभिधा जकाँ कथित होइत अछि आ' ने लक्ष्यार्थक सदृश लक्षित, अपितु ई व्यंजित ध्वनित

Scanned with CamScanner

सूचित एवं प्रतीयमान होइत अछि। एहिमे व्यंग्यार्थ पर्यायवाची शब्द प्रतीयमानार्थकेँ स्पष्ट करैत अछि। अविधा एवं लक्षणा मात्र शब्दक हेतु शक्ति अछि, किन्तु व्यञ्जनाक सम्बन्ध शब्द एवं अर्थ दुनू सँ अछि। तेँ व्यञ्जना-शक्तिक अनेक भेदोपभेद अछि। ई दू प्रकारक होइत अछि– शाब्दि व्यञ्जना एवम् आर्थी व्यञ्जना। पुनः शाब्दि व्यञ्जनाक दू भेद अछि— अविधामूला एवम् लक्षणामूला। एहिना आर्थी व्यञ्जना दस प्रकारक होइत अछि।

अतः व्यञ्जना-शक्ति काव्यकेँ चमत्कृत करबामे अत्यंत सहयोगी होइत अछि एवं एकहि वाक्यमे भिन्न-भिन्न स्थान पर भिन्न-भिन्न अर्थ स्पष्ट करैत अछि। जेना-"सूर्यास्त भऽ गेल।" एहि ठाम विद्यार्थी लोकनि संध्या बूझि पढ़बाक हेतु घर आबि जाइत अछि एवं पुजारी संध्या-वन्दन करैत छथि।

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग

Scanned with CamScanner